





श्रीः

श्रीलक्ष्मीदेवे नमः ॥ ॥ आचम्य शान्तं वधीला धास फे कतु नामालको मोता स ए चो य माल
को बो य ॥ ॥ त्रिया च म्य ॥ प्राणा धाम न्यास ॥ तीर्थ आवाह ॥ देवता दिस नानादि ॥ ॥
आचम्य ॥ न्यास ॥ ॥ सूर्या र्ध ॥ अद्यादि ॥ वाक्य ॥ ॐ अश्व काश्यप गोत्र स्पतः अमुक
नामा मम श्रीलक्ष्मीदेवता सुप्र न्न द्वा रा धन धान्यादि ऐ स्वर्ग्य फल प्राप्ति काम नार्थ लक्ष्म्यु स्था
ना अमा कात्या पर्वणि श्रीलक्ष्मी पूजा निमित्ति र्ध कर्तुं श्रीवृहत्मान वेद मर्घ नमः ॥ पूष्य न
मः ॥ ॥ गुरु नमस्कारादि पूर्व मुद्रि ॥ - ॥ न्यास निष्पद्या धुने ध विवे स ॥ ॐ विभु ते नमः
शिखा ॥ ॐ नमो नमः शिरः ॥ ॐ कांते नमः ललात ॥ ॐ सृष्टे नमः मुख ॥ ॐ कीर्त्ते नमः हृदि
॥ ॐ शान्ते नमः पादौ ॥ ॐ नमो नमः पादौ ॥ ॐ नमो नमः पादौ ॥ ॐ नमो नमः पादौ ॥

शिरः॥ ॐ नमः॥ शिरः॥ ॐ कात्थनमः॥ ललात॥ ॐ मृदुनमः॥ मुख॥ ॐ कात्थनमः॥ हृदि
॥ ॐ सन्तनयेनमः॥ नाभि॥ ॐ बुद्धेनमः॥ गुह्य॥ ॐ उत्कृष्टेनमः॥ जानु॥ ॐ अक्षेनमः॥ पाद॥
ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी पूजामंत्रस्य भृगु ऋषि निवृत्ति हृदो श्रीलक्ष्मी देवता शोबी जई शक्ती हं
कीलक मम चतुर्वर्ग साधने विनियोगः वध्वांजलि ॥ ॐ भृगु ऋषये नमः शिरः॥ निवृत्ति
हृदसे नमः मुखे॥ श्रीलक्ष्मी देवता ये नमः हृदि॥ शोबी शायनमः गुह्य॥ रंशक्तये नमः जानु
हं कीलकाय नमः पादो॥ मम चतुर्वर्ग साधने विनियोगः वध्वांजलि ॥ ॥ ओं भृगु ऋषि
॥ जलपात्र पूजाः लेखपूजाः अर्घ्यपात्र पूजा ॥ नैव आदि शोधन ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ तर्पण
विशेष तर्पण ॥ श्रीलक्ष्मी कर्पयामि नमः ॥ ॥ प्रचवलि ॥ विशेष वलि ॥ देहेभ्य नमः ॥ ज
पाय नमः ॥ विजयाय नमः ॥ ह्रीं वैकुण्ठाय नमः ॥ चण्डाय नमः ॥ प्रचण्डाय नमः ॥ भुवण्ये नमः
॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ कंकमिलाय नमः ॥ विष्णुने नमः ॥ नृसिंहाय नमः ॥ ॥ आवा
हन ॥ ॐ नमो देवि प्रमसागि सर्वसम्पत्तिदायिनि ॥ ऐं हृदि मण्डले चात्र तिष्ठतां पूजयाम्यहम्
॥ ॥ अघपात्रया गुली नहाय ॥ ऐं अस्त्राय फट् ॥ अवगुंथन ॥ सोय ॥ ॐ ऐं ह्रीं कवचो
यह ॥ ॐ नैत्रत्रयाय वषट् ॥ ह अस्त्राय फट् ॥ ॥ देवधिया वप्राण प्रतिष्ठा ॥ ॐ
ॐ ह्रीं कौं यरत्न वसय शहलक्ष हस तो हं श्रीलक्ष्मी देव्या प्राणाः जीव र ह स्थिता सर्वेन्द्रि
याणि इति स्मृतु ओं १६ श्रीलक्ष्मी देव्या प्राणा वायु अक्ष ओत्र घ्राणा प्राणा इहाग
त स संनि तिष्ठन्ताम् ॥ ॥ आसन पूजा ॥ आधार सक्तये नमः ॥ सेवाय ॥

ॐ ह्रीं कोयल नमः शिवाय ॥ श्री लक्ष्मी देव्या प्रणवा ॥ अथ धु ओ न धारा प्राणा इहा ग
याणि इति धुतु ओं १६ श्री लक्ष्मी देव्या प्रणवा ॥ अथ धु ओ न धारा प्राणा इहा ग
न सुखं चिरं मिष्टं तुला ॥ ॥ आसन पूजा ॥ आ धार स कये नमः ॥ सेवाय ॥
कु मी मिनाय ॥ मदु काय ॥ वराहाय ॥ पृथिव्ये ॥ क्षीर समुद्राय नमः ॥ स्वेत क्षीपाय ॥ मणि
मण्डपाय ॥ कल्प वृक्षाय ॥ मणि वेदिकाय नमः ॥ रुद्र सिंहासनाय ॥ ॥ आग्ने कोरो
॥ अधर्माय ॥ शान्ताय ॥ वैराजाय ॥ ऐं सूर्याय ॥ ॥ पूर्वादि चतुर्दि ॥ अधर्माय ॥
अशान्ताय नमः ॥ अवैराजाय ॥ अने सूर्याय ॥ ॐ ह्रीं शान्तात्मने ॥ ॐ पद्मासनाय ॥
॥ ॥ ध्यान ॥ मानिक्य ॥ जा प्रादि ॥ ॥ नयानि ॥ ॐ ह्रीं को लक्ष्मी दे
व्ये नमः ॥ ऐं ह्रीं ह्रीं ओम ह्रीं लक्ष्मी नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥ धु धु धु
नमः ॥ ॐ नमः शुद्धवा ॥ नमः ॐ नमः ॥ ॥ विभूत्या विभूत्या वि पूजया ॥
ॐ ह्रीं को लक्ष्मी देव्या ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ऐं ह्रीं को लक्ष्मी देव्या ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

२॥ आतिद्विजलक्ष्मीदेवे नमः ॥ ॐ कारुण्यं हिमभुभ्रदे हं पंचाननां पंचदशायताक्षीं बीजायमा
नांदशभिः करेणैः श्रीसिद्धिलक्ष्मीं प्राणायामिनित्यं ॥ १ ॥ कूर्चं जहं मेर्जनं हस्तसंस्थामानन्द
रूपैश्च निवासयंतीं विविचरत्नाभरणाभिरामां श्रीं ॥ २ ॥ कूर्कारनादां हतं देत्यदक्षीं ब्र
ह्मेन्द्रचूडामणिवृष्टपादां हृद्रोगसंस्थोरमणीयवेश्यां श्रीं ॥ ३ ॥ हां विश्वधात्रीं त्रि
गुणात्मरूपां सृष्टिस्थितिप्रत्यवहारहेतुं ज्योतिर्मयीं दीनदयाई विक्तां श्रीं ॥ ४ ॥ प्रैका
रावैः समरे सुरादीन् विदारयंतीं मतिभीमरूपां सहस्रबालार्कसमप्रकाशां श्रीं ॥ ५ ॥
क्षोभयंतीं सुरदेत्यमर्त्या त्रैलोक्ये नवयोवनाद्यां खडादिशस्त्रैरतिदीप्यमानां
श्रीं ॥ ६ ॥ क्रौं मोहरूपी भुवनत्रयाणां विष्वाधरं संस्मितवारुदेतां पयोधरानम्रत
नुसुरेशीं श्रीं ॥ ७ ॥ नवो धराज्ञाङ्गनिभाभवानीं भक्तप्रसन्नां भवभीतिहंतुं त्रैलो
क्यवंद्यां सुरवृन्दवंद्यां श्रीं ॥ ८ ॥ मोक्षेकप्रदामरविन्दनेत्रामानन्दकन्दाममलां
वराद्यां शरीरभाजां हृदयावुसंस्थां श्रीं ॥ ९ ॥ हरिहरमुखः पद्मानिः सृते सिद्धि
लक्ष्मीः सारविममतिगुह्यं रजितं मंत्रराजैः पठति भुवि सदा यः क्षीणविकोपिमर्त्यः
स भवति नानाथः सर्वराजेन्द्रसेव्यतः ॥ १० ॥ इति श्रीसिद्धिलक्ष्मीनवारीस्तोत्रं ॥ शुभ ॥

अद्यादि ॥ काश्यप गोत्राद्या गुप्तेथ कुंताम्ना मम जन्म लग्नात् ५ सूर्य जन्म लग्नात् केम
 दुमार्क उयोगिकारक १२ स्थचक्र गोचरात् २ भोग जन्म लग्नात् ३ बृहस्पति जन्म लग्ना
 त् ७ गोचरात् ९ शनैश्चर जन्म लग्नात् ४ गोचरात् ९ राहु गोचरात् ७ केतु योगिन्ना ३
 ल्कादशा एता निग्रह दशा ५ रिष्ट जन्म पीडा शान्ति पूर्वक सपुरुषायाः सर्वविघ्न प्रशम
 न शरीर रोग्यदीर्घायुः प्राप्त्यर्थं श्रीमन्निजकुलपीठचा मुंडा देवी भट्टारका सुप्रीतये स
 पादलक्षपरिमितान् माषान् सपादलक्षपरिमितान् कालमाषान् समर्पयिष्ये —